Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-XI Nov. 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

स्वामी दयानन्द जी की वैचारिक उत्कृष्टता

अंजना रानी
सहायक प्रोफेसर,
डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर।

स्वामी जी वह दिव्य पुरुष, महान समाज सुधारक और कर्मठ योगी थें जिन्होंने अपने बुद्धिबल, तेजबल और विद्याबल से भारत को एक शक्ति प्रदान की। भारत में फैले अनाचार, अज्ञान और अंधविश्वास को समूल नष्ट करने और भारत में पुनर्जागरण लाने वाले स्वामी दयानन्द जी ही थे। जब इनका जन्म हुआ, उस समय कौन जानता था कि यह बालक बड़ा होकर अपने कर्मठ जीवन सिद्धान्तों और प्रतिभा–वैशिष्ट्य से समाज, राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय वैचारिक धरातल को भी कंपित कर देगा।

आधुनिक युग को प्रकाश की पहली किरण देने वाले महार्षि दयानन्द एक महान क्रांतिकारी थे। उनकी क्रांति सर्जक और प्रेरक थी। शान्ति और प्रेम के अस्त्र से बुद्धि का विकास उनका इष्ट था। वे क्रांति चाहते थे, पर न राज्य की, न काम की, अपितु केवल विचारों की।

भारतीय नवजागरण के संदेशवाहक स्वामी दयानन्द ने समाज में नवचेतना का प्रादुर्भाव किया। उन्होंने पुराणपन्थी, गुतानुगतिकता का पल्ला पकड़ रूढ़ि मात्र को ही धर्म मान बैठे ब्राह्मणों को पुनः समाज के अग्रगन्ता एवं मार्गप्रदर्शक का पद ग्रहण का पुरुष होने के अभिषाप से बचाया। वैश्यों को ईमानदारी से द्रव्य उपार्जित कराने तथा देश को समृद्ध तथा ऐश्वर्यशाली बनाने की प्रेरणा दी। शूद्रों का तो सामूहिक उत्थान ही उन्हें अभीष्ट था। इस प्रकार न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु संपूर्ण मानवता के सामाजिक धरातल को उन्नति एवं प्रगति के शिखर पर पहुँचाना स्वामी दयानन्द का लक्ष्य था।

इन सन्यासी जी के हृदय में यह प्रबल इच्छा और उत्साह था कि सारे भारतवर्ष में एक शास्त्र प्रतिष्ठित हो एक देवता पूजित हो, एक जाति संगठन हो और एक भाषा प्रचलित हो। यही नहीं, वह सिर्फ इच्छा रखते थे बल्कि इसको पूरा करने के लिए भी कार्यरत हुए। जो भारतीय लोगों में चरित्र अमानवीयता, पशुत्व और नीच प्रवृतियाँ संचारित हुई हैं, उनका एक मात्र कारण मूर्तिपूजा है। दयानन्नद जी ने यह कदापि स्वीकार नहीं किया कि मूर्तिपूजा सार्थक है, हालांकि बहुत सारे सुधरकों ने मूर्तिपूजा के प्रतिवाद पर समय आने पर समझौता भी किया। उनका कहना था कि "जो धर्म सम्पूर्ण रूप से आन्तरिक व आध्यात्मिक था उसे स्थूल और ब्रह्मा किसने बनाया? कामादि शत्रुओं के दमन और वैराग्य साधन के बदले तिलक और सफेद चोला धरण करने को ही मोक्ष का साधन किसने बनाया? ईश्वर भक्ति और परोपकार प्रीति पर स्वार्थ त्याग के बदले अंग में गोपीचन्दन का लेपन कष्ठ में अनेक प्रकार की मालाओं के धरण को ही परासाधाना किसने बताया। संयम शुद्धता चित्त की एकाग्रत आदि के स्थान पर केवल दिन विशेष पर अनाज विशेष सेवन न करना आदि स्थूल आदि रीतियाँ किसने प्रचलित की? इन सब का उत्तर है – मूर्तिपूजा। उन्होंने सत्य धर्म एक ही माना है और उनकी दृष्टि में धर्म वही हो सकता है जो श्रेष्ठ मानव मूल्यों की रचनात्मक प्रक्रिया को गतिशील रखने के सक्षम हो सके।

स्वामी जी ने अपने विचारों में एक कहा कि आप लोग आर्य पुत्र हैं, आर्य संसार के धर्मगुरू रह चुके हैं। आपके वेद संसार के आदि धर्म ग्रन्थ हैं। यदि आप को सत्य का दर्शन

करना है तो वेद की शरण में आना पड़ेगा। अतः अब आप लोग नींद से जागो और दूसरों को भी जगाने का प्रयास करो। हम इसी विचार को वास्तविक रूप में जाने के लिए आदर्श विद्या मन्दिर जैसे विद्यालय चलाते हैं जहाँ दैनिक जीवन के साथ–साथ वैदिक धर्म की शिक्षा दी जाती है।

नारियों की शिक्षा के क्षेत्र में भी आर्य समाज ने युगान्तकारी परिवर्तन किये। "स्त्री शूद्रोनाधी यातामिती श्रुतेः" वाली मनघडन्त श्रुति को आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी ने कभी सही नहीं माना बल्कि युजर्वेद के आधर पर उन्होंने यह प्रतिपादित किया – वेदों का प्रकाश ईश्वर ने सबके लिए किया है। अतः यह अनिवार्य हो जाता है कि लड़के और लड़कियों को विद्धान और विदुषी बनाने के लिए तन–मन–धन से प्रयत्न किया जाये जिससे स्त्रियाँ भी वेदाभ्यास करके गार्गी और मैत्रेयी आदि विदुषियों की भाँति विदुषी बन सके और तेजस्वी व्यक्तित्व विकसित कर सके।" स्त्रियों के पढ़ने का निषेध आर्य निर्बुद्धि का परिचायक माना है। स्वामी जी के अनुसार विद्धान्त पति और अनपढ़ एवं असंस्कृत पत्नी गृहस्थी की गाड़ी को सुचारू रूप से कदापि नहीं खींच सकते।

शिक्षित नारी ही अपने अधिकारों के प्रति मूलरूप से जागरूक रह सकती है। इसलिए उन्होंने पुरुषों के समान स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, गणित, शिल्प आदि सभी शिक्षाओं के लिए योग्य ठहराया। महार्षि दयानंद जी ने आर्य समाज के आठवें नियम "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए" में ही स्त्री शिक्षा पर बल देने का वर्णन किया है।

स्वामी जी ने एक सिद्धान्त भी दिया था कि "कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। हमारी मानसिकता यही कहती है कि हम जो भी करें यह सोच के करें कि उसका प्रभाव हमारे आने वाले कल पर पड़ेगा। स्वामी जी ने सामाजिक सुधार के क्षेत्र में छुआछूत एवं जन्म के आधार पर जाति प्रथा की अलोचना की। स्वामी जी शुद्रों एवं वंचित वर्गों के लिए अधिकारों के हिमायती थे और आज हमारा समाज "बेटी पढ़ाओं की सोच को लेकर चल रहा है।

दयानंद जी ने माता–पिता को बालक का प्रथम गुरू बताया है। स्वामी जी के दर्शन के अनुसार ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए जो पूर्ण रूप से राष्ट्रीय हो और जो ऐसे नागरिक उत्पन्न करे जिनमें समाज के प्रति कर्तव्यपरायणता और उत्तरदायित्व की भावना विद्यमान हो और साथ ही साथ बालक के चरित्र के विकास के लिए नैतिक शिक्षा दिया जाना भी अति आवश्यक है। स्वामी जी के इसी दर्शन की आज महती आवश्यकता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सदैव स्वराज्य, स्वधर्म, स्वदेशी व स्वभाषा का समर्थन किया। उनके दर्शन के अनुसार अपने देश पर गर्व करना, प्राचीन वैदिक संस्कृति का अनुकरण करना और भारत को गौरवशाली बनाने का प्रयास करना आदि राष्ट्रवादी विचारों को भारतीयों की मानसिकता में भरकर, लोगों में देश प्रेम आत्म गौरव और आत्म सम्मान भावनाएँ जाग्रत कर उन्हें साहस और प्रगति के पथ पर अग्रसर किया जाना चाहिए।

"वेदों की ओर लौटो" का नारा देते हुए वे मानव जाति को एक धर्म, मानव धर्म का तर्क देते हुए ज्ञान का सम्पूर्ण आधार सृष्टि के आदि में प्रभु प्रदत्त वेद की पवित्र ऋचाओं में वर्णित माना था। उन्होंने अपूर्व पांडित्य से यह सिद्ध किया कि वेद ज्ञान का सूर्य है एवं सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, ओर उसमें कोई भी बात सत्य, विज्ञान युक्त और प्रकृति नियमों के विपरीत नहीं है। उन्होंने पाखंडों का विरोध करके वैदिक विचारधारा के प्रचार द्वारा समाज के निर्माण में अकथनीय योगदान देते हुए भूत–प्रेत, फलित ज्योतिष, शकुन–अपशकुन, जन्म–मरण

के प्रश्न को लेकर ज्योतिषियों के चंगुल में फँसी त्रस्त जनता का उद्धार किया था, और भविष्य के भय से पीली पड़ी जनता को आश का नया संदेश देकर जीवन को मंगलमय बनाया।

स्वामी जी परम आध्यात्मिकता के वह केन्द्र बिन्दु थे, जहाँ से असंख्य लोगों को प्रेरणा एवं जीवन की सच्ची दीक्षा मिली। भारत की नारी व पुरुष को शिक्षा के क्षेत्र मे वैदिक ज्ञान मिला। पुरुष के द्वारा नारी को सम्मन मिला और घर को प्यार का मंदिर बनाने का सम्बल मिला। स्वयं कष्ट भोगकर मानवता के मसीहा ने जीवन को पूर्णता दी। जीवन इन्हें पाकर धन्य हो गया व अज्ञानता का कूड़ा कर्कट साफ हो गया। इस प्रकार स्वामी जी ने स्वयं को मृत्युंजय बनाने के प्रण को डी.ए.वी. संस्था व आर्य समाज के माध्यम से साकार कर दिखाया।

सन्दर्भ

श्री देवेन्द्र मुखोपाध्यायः स्वामी दयानंद जीवन चरित्र।

श्री रामधारी सिंह दिनकर, भारतीय संस्कृति के चार अध्याय।

मंजू शर्मा, महर्षि दयानन्द सरस्वती और स्त्री विमर्श आर्य प्रकाशन मंडल, 2011

शशि, युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती, डायमण्ड बुक्स लिमिटेड।

प्रशान्त वेदालकारः जीवन के पाँच स्तम्भ, गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली।

राम गोपालः दयानन्द दिव्य दर्शन, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली।

विवेकः स्वामी दयानन्द, उमेश प्रकाशन, नाथ मार्केट, दिल्ली।

डॉ. हरगुलाल गुप्त, महार्षि दयान्द और उनकी अनुवर्ती डी.ए.वी. पब्लिकेशन फॉडन्डेशन, नई दिल्ली।

डॉ. नमिता मैगी, आर्य समाज का हिन्दी आत्मकथा में साहित्य योगदान, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली।

यदुवंश सहाय, महार्षि दयानन्द, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com